मधु कथ्य

सती सावित्री कथा

(खंड काव्य)

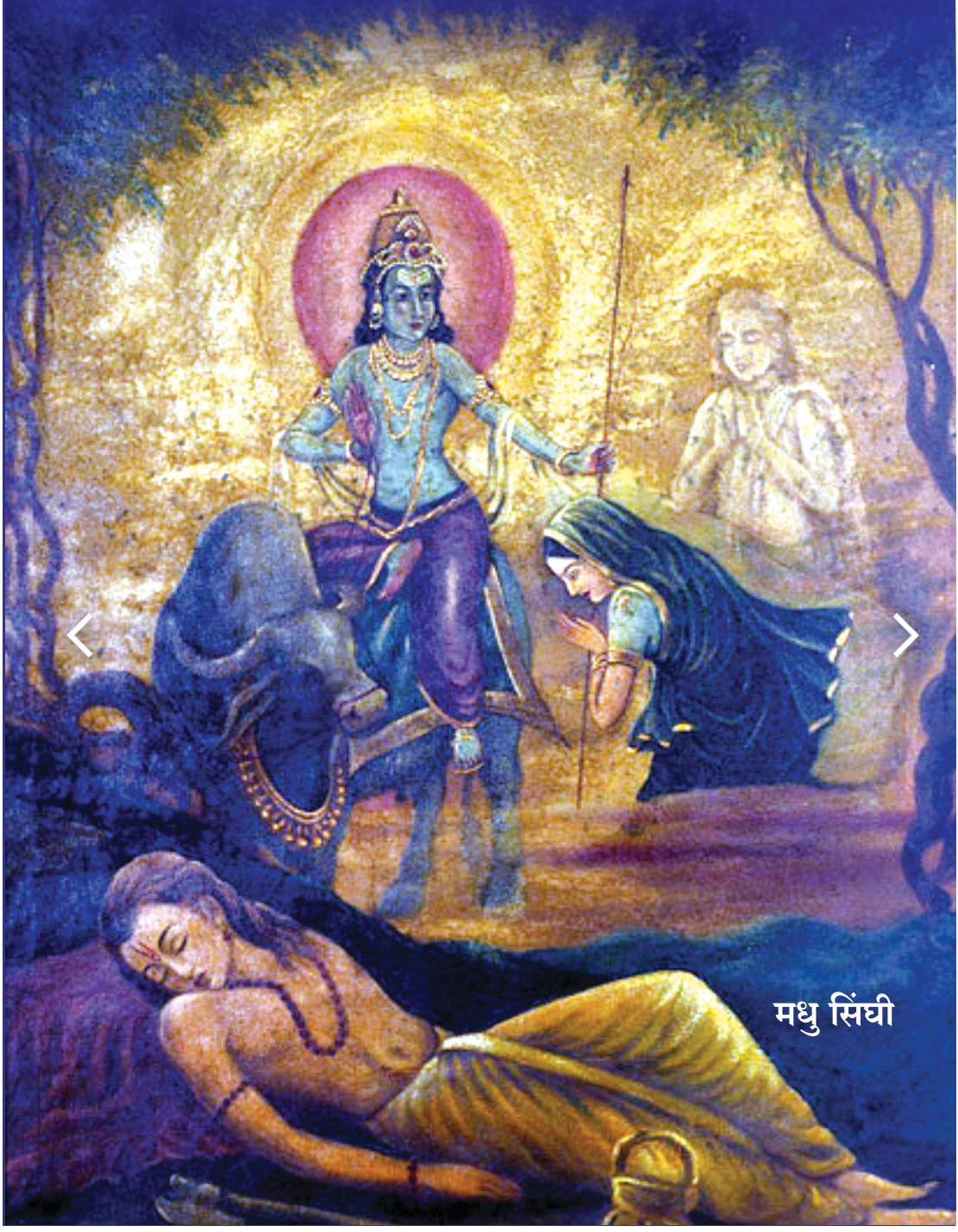

मधु सिंघी

मधु कथ्य

सती सावित्री कथा

(खंड काव्य)

मधु सिंघी

AVISHA
अविशा
प्रकाशन

मधु कथ्य

सति सावित्री कथा (खंड काव्य)

कवयित्री

मधु सिंघी

.....

मुखपृष्ठ / छायाचित्र

मधु सिंघी

206, हिमालय पैराडाईज,

सिविल लाईन्स, नागपुर (महाराष्ट्र)

पिनकोड - 440001

मोबाइल : **+ 91 9422101963**

.....

ई-मेल :

msmadhusinghi8@gmail.com

.....

परामर्श : अविनाश बागड़े

.....

अविशा प्रकाशन

84, अविशा, जैतनवन सोसायटी, शास्त्री ले-आऊट,

खामला, नागपुर - 440025

मोबा. 9373271400

aavinashbag@gmail.com

.....

मुद्रक : स्कॅन डॉट कॉम्प्युटर, नागपुर

.....

© सर्वाधिकार लेखकाधीन

प्रथम संस्करण : **2024**

ISBN : 978-93-94577-96-1

मूल्य ₹ 200

मेरी निगाह में...

मधु सिंघी जी, नाम के अनुसार ही मधुरता का प्रतिनिधत्व करने वाली काव्य विधा यानी भारतीय छंदों की ओर उनका स्वाभाविक रुझान रहा है। दोहों से शुरू हुई उनकी सृजन यात्रा आज कुंडलियां, आल्हा सहित विविध छंद लेखन पर अपना प्रभुत्व रखती है। उनका झुकाव धार्मिकता की ओर होने के कारण ही जैन धर्म के गूढ़ ज्ञान को उन्होंने सहज कुंडलियों में जहां सार्थकता के साथ 'मधु सार' पुस्तक में प्रस्तुत किया वहीं आल्हा छंद का आधार लेते हुए अब वे सती सावित्री और सत्यवान की पौराणिक कथा को आप तक ला रही हैं। यहां संक्षेप में इस छंद पर यही कह सकते हैं....

आल्हा छंद अर्ध सम मात्रिक छंद है। इसके चार चरण होते हैं। प्रथम और तृतीय चरण में समान सौलह मात्राएं होती है। अंतिम चार मात्राएँ गुरु-गुरु, लघु-लघु-गुरु या गुरु-लघु-लघु होती है। द्वितीय और चतुर्थ चरण में समान पंद्रह मात्राएँ होती है। इन दोनों चरणों में अंतिम तीन मात्राएं गुरु-लघु ही होती है तथा दोनों चरण दोहे की तरह सम तुकांत होते हैं। पूरे दोहे में गुरु-लघु, लघु-गुरु इस तरह त्रिकल का प्रयोग करने पर दोहे की लय अति सुंदर बनती है और दोहे की गेयता कर्णप्रिय बन जाती है।

छंदों की यह मधु बंदगी यानी 'मधु सार' के बाद खंड काव्य 'मधु कथ्य' उनके लेखन को नया आयाम देगी।

मेरी निगाह में

अविनाश बागड़े

पूर्व सदस्य,

महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी, मुंबई

मधुरिम और आकर्षक : मधु कथ्य

अत्यंत पावन पवित्र चरित्र की धारिणी सतयुगीन सावित्री अपने पति सत्यवान की आयुष्य की रक्षिका बन दिव्यता के परिचय में अनुपम है। सत्यवान सावित्री की कथा सम्मोहन से परिपूर्ण विस्मयकारी कथा है। इसे साधारण या विशिष्ट शब्दों से अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता, क्योंकि कुछ घटनाएं शब्द सामर्थ्य के परे रहती हैं। सामान्य व्यक्ति को ऐसी अनहोनी घटनाएं काल्पनिक सी लगती हैं, क्योंकि सती सावित्री की कथा में सावित्री अपने तपोबल से अपने पति सत्यवान के मृत शरीर में प्राणों का संचार करवा देती है। ऐसी कथाएं उस ब्रह्मांडीय सत्य को उजागर करती हैं जो अनुपम शक्ति सामर्थ्य लिये पारलौकिक सत्ता में व्याप्त हैं।

आध्यात्मिक चेतना से परिपूर्ण श्रीमती मधु सिंघी जी ने बहुत ही उत्कृष्ट चरित्र का चयन करते हुए सती सावित्री की कथा को अपनी लेखनी का विषय बनाया है और आल्हा छंद में उसे संजोया है। अंतर्मन को गहन विषय वस्तु तभी छूता है जब चिंतन दिव्यता का परिचय देकर शुभ परिणाम में अभिव्यक्त होना चाहता है। मधु जी ने सती सावित्री के साहसिक और उत्कृष्ट चरित्र को उकेर कर आज की नारी जाति को संदेश देना चाहा है कि नारियों में अपार क्षमताएं हैं। उनके शक्ति समर्थ की ऊंचाइयां उस स्तर को छू सकती है जहां संपूर्ण जीवन का अंत मृत्यु शब्द में भस्म हो जाता है,जहां सांसों का स्पंदन खत्म हो जाता है, जहां यमराज जैसी विकराल विभूति का अस्तित्व समक्ष खड़ा होकर भयभीत कर देता है जिसके दर्शन भी पृथ्वी लोक के प्राणी नहीं कर सकते हैं। ऐसी विकराल परिस्थितियों पर भी नारी विजय प्राप्त कर सकती है।

आज जहां कुछ बिमार मानसिकता के पुरुष नारी को मात्र भोग की वस्तु समझ कर उसकी योग्यता को यहां तक कि उसके अस्तित्व को धूल धूसरित करने में अपना पौरुष समझता है वह

नारी को आघात पहुंचाने की भूल कर बैठता है। नारी सृष्टि की जननी है इसीलिए पूज्या है उसके अस्तित्व को आघात पहुंचाने का अर्थ है विनाशकारी तत्वों को निमंत्रण देना इसके लिए बाल्यकाल से ही हर व्यक्ति के लिए सशक्त शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है।

मधु जी ने इस कथा को खंडकाव्य में वर्णित कर और अधिक मधुरिम और आकर्षणीय बना दिया है। उन्होंने काव्य को आकर्षक बनाने हेतु आल्हा छंद के साथ कुंडलियां, दोहा और रोला छंद का भी प्रयोग किया है। खंडकाव्य किसी विशिष्ट घटना या प्रसंग को लेकर चलता है और इसी कारण छंदों के चयन से रचनाकार की अभिरुचि परिलक्षित होती है। विषय वस्तु के अनुसार सती सावित्री का साहसिक चरित्र है इसलिए कवयित्री ने आल्हा छंद जिसे वीर छंद भी कहा जाता है उसका आश्रय लिया है। 15 -16 मात्राओं की प्रतिबध्दता निश्चित ही रचनाकार के लिए एक चुनौती है जिसे मधु जी ने बड़े ही कुशलता से निर्वाह किया है कुछ छंदों का आकर्षण दर्शनीय है।

दोहा छंद

योद्धा विजयी युद्ध में, जीते ऋषि रख मौन ।
बलशाली देखे बहुत, जीता यम से कौन ॥६॥

रोला छंद

पृथ्वी से यमलोक, चल दी सशरीर नारी ।
सत्यवान के साथ, यम पर पड़ गई भारी ॥५॥

आल्हा छंद

चंचल अरु आखेट निपुण थी,
ऐसा तेज विलक्षण ओज ।
जो भी देखे हर्षित होता,
जैसे मुखड़ा एक सरोज ॥३४॥

सत्यवती वो रूपवती थी,
जीवन मूल्यों का था बोध ।
मानक सब जीवन के जाने,
अद्भुत एक विलक्षण शोध ॥३२॥

आज भी नारी को इसी तरह की शिक्षा पद्धति की आवश्यकता है जिसमें नैतिक मूल्यों के साथ आत्मरक्षण के लिए भी वह सतत निपुण हो सके। अंत में यही कहूंगी कि आदरणीय विदुषी मधु जी का शुभ संदेश आत्मबल प्रदायक है जो समाज को एक नयी चेतना देकर उनको दिव्य संकल्प के साथ जागृत करेगा। ऐसी शुभकामना के साथ

डॉ. शीला भार्गव
मोबा. 9922935357
ए1/205, सेमिनरी हिल, फॉरेस्ट कॉलोनी,
नागपुर (महाराष्ट्र)

मेरा मंतव्य

आज नारियों को अच्छी परवरिश मिल रही है। उनका शिक्षा के साथ-साथ सर्वांगीण विकास भी हो रहा है। आधुनिक नारियाँ हर क्षैत्र में अपना कीर्तिमान स्थापित कर रही हैं। काफी विदुषी और कर्मठ नारियों को उनके कार्य का उचित प्रतिसाद भी मिल रहा है, परंतु कई परिवारों को विघटित होते हुए भी देखा जा रहा है। कहीं न कहीं उन परिवारों में आपसी सामंजस्य उतना नहीं बैठ पा रहा है जितनी आवश्यकता है। आज इस आपाधापी की ज़िंदगी में आपसी प्रेम, विश्वास और धैर्य कहीं खो तो नहीं रहा है, कहीं लोग अपने व्यक्तिगत उत्थान करने में सामाजिक संतुलन तो नहीं खो रहे हैं। जहाँ पढ़ी-लिखी नारियाँ पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने की चेष्टा कर रही हैं वहाँ उन्हें सम्मान मिलने में कहीं कमी तो नहीं आ रही है। आज के इन ज्वलंत प्रश्नों पर विचार करने की आवश्यकता है। सती सावित्री की जीवनी पढ़कर हमें कहीं न कहीं इन प्रश्नों का समाधान भी मिलता है। सावित्री के पिता, पति और परिवार के सभी सदस्यों ने उसके बुद्धिमानी और धैर्य की कद्र करते हुए उसे सदैव पूर्ण संबल दिया तभी वह पूरे आत्मविश्वास के साथ अपना जीवन जीने के लिए कटिबद्ध रही। वह अपने जीवन के हर पहलू पर स्वयं निर्णय लेने में समर्थ हो सकी।

प्राचीन काल की बात है आज के पिताओं की तरह राजा अश्वपति ने अपनी पुत्री को हर विधा में पारंगत किया। माता ने गृहकार्य में दक्ष किया और नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी यहां तक कि राजा अश्वपति ने अपनी पुत्री को स्वयं वर ढूंढ़ने के लिए पूर्ण सुविधा देकर अकेले ही निजी सेवकों के साथ राज्य के बाहर भेजा। सावित्री ने उस अवसर का सही उपयोग करते हुए कई ऋषि-मुनियों के साथ चर्चा की और उचित वर ढूंढ़ने के संदर्भ में प्रश्नोत्तर भी किये। अलग-अलग राज्यों के राजकुमारों से मिली। नैतिक मूल्यों के अनुसार चलने वाले सावित्री ने अंत में सत्यवादी सत्यवान

को वर के रूप में पसंद किया। उसने देखा कि सत्यवान के मन में सबके प्रति विनम्रता का भाव है। वह अपने वृद्ध और अंधे माता-पिता की सहजता से सेवा करता है। वह भी उसके समान बुद्धिमान और धैर्यवान है। सावित्री ने घर जाकर तुरंत अपने पिता को सत्यवान के बारे में बताया। सावित्री के माता-पिता को नारद मुनि से जब सत्यवान के अल्पायु और वनवासी होने की बात पता चली तब उन्होंने सावित्री को एक बार पुनः विचार करने को कहा। इतनी सुख-सुविधा में जिस पुत्री को पाला था वह पिता किसी वनवासी को अपनी पुत्री को कैसे सौंप देते अतः उनका चिंतित होना भी स्वाभाविक था। उन्होंने सत्यवान के अलावा दूसरा वर ढूंढ़ने की सलाह भी दे डाली लेकिन, सावित्री ने पिता को समझाया कि सत्यवान ज्ञानी और सत्यवादी होने के साथ-साथ स्त्रियों के प्रति पूर्ण आदर भाव रखता है इसलिए वह उससे बहुत प्रभावित हुई है। उसने मन ही मन उसे अपना वर मान लिया है। माता-पिता को अपने मन की बात को धैर्यपूर्वक समझाया। उनकी सहमति से विवाह किया। विवाह के पश्चात ससुराल में पति और सास-ससुर ने भी वैसा ही सम्मान दिया। उन्होंने भी सावित्री पर पूरा विश्वास किया जिसके कारण वह दोनों परिवारों के हित में सोच पायी।

सावित्री ने विपरीत परिस्थितियों में पूरे धैर्य के साथ बुद्धि कौशल का परिचय देते हुए अपने पति सत्यवान को यमराज के बंधन से मुक्त करवा कर लंबी उम्र का वरदान मांगा इसीलिए वह सती सावित्री कहलायी। इतना ही नहीं अपनी युक्ति और सूझबूझ से अपने अंधे सास-ससुर की नेत्र ज्योति और उनका खोया हुआ राज्य भी वापिस दिला दिया। और तो और अपने माता-पिता के लिए भी यमराज से पुत्र होने का वरदान प्राप्त किया।

आज भी नारी को ऐसे परिवार की जरूरत है जहाँ के लोग उसके मन की बात को सही परिप्रेक्ष्य में समझ सके और उसे उचित सम्मान दे सके ताकि वह अपनी बुद्धि का सकारात्मक उपयोग कर अपने परिवार को मजबूत बनाये रखने का कार्य कर सके। पति-

पत्नी के आपसी सहयोग से परिवारों के विघटन को काफी हद तक रोका जा सकता है। हर स्त्री में यह सामर्थ्य है कि वह अपनी बुद्धि और धैर्य के साथ हर असंभव कार्य को संभव कर सकती है। साथ ही साथ अपने आसपास में रहने वाले हर व्यक्ति के हित में कार्य कर सकती है । बस आज जरूरत है उस पर विश्वास करने की, उसे उचित सम्मान देने कि ताकि वह अपने आत्मविश्वास को बनाये रख सके। नारियाँ सदियों से ज्ञानी रही हैं यहाँ तक कि ज्ञान की देवी सरस्वती भी एक स्त्री को ही माना गया है। नारी जैसा चाहे वैसा जीवन जी सकती है। हर विपरीत परिस्थिति को अपने अनुकूल ढ़ालने का सामर्थ्य स्त्री में होता है इसीलिए बच्चे पैदा करने और पूर्ण ममत्व के साथ उसे बड़ा करने का कार्य भी सृष्टि ने उसे ही सौंपा है। मुश्किल से मुश्किल परिस्थितियों में अपने लक्ष्य के प्रति अडिग रहना कोई आसान कार्य नहीं है उसके लिए पूरे आत्मिक बल के साथ अथक परिश्रम करने की आवश्यकता है।

इन तथ्यों को समेटते हुए मैंने 'मधु कथ्य सती सावित्री कथा' नामक इस पुस्तक को लिखा है। बूंद-बूंद से सागर भर सकता है मेरी तरफ से भी यह पुस्तक सामाजिक बदलाव के लिए एक छोटा सा प्रयास है। मधु कृति (हाइकु), मधु छंद (दोहा), मधु श्रव्य (भजन), मधु काव्य (छंदबद्ध कविताएं) और मधु सार जैनदर्शन चिंतनःजीवन साधना (कुंडलियां छंद) के बाद मेरी यह छठी पुस्तक 'मधु कथ्य' आल्हा छंद में होने के कारण इसकी गेयता भी विशेष बन गयी है। पुस्तक के अंत में सती सावित्री की कथा गद्य में भी दी गई है। अंत में -

नारी को सम्मान मिले जब,
पूरे सबके करती कार्य ।
बात यही फिर जानो सब मिल,
ये ही सबसे है अनिवार्य ।।

मधु राजेन्द्र सिंघी
नागपुर (महाराष्ट्र)

समर्पण

भारत के इतिहास में सति सावित्री एक ऐसी नारी हुई है जिसने यह सिद्ध करके दिखलाया था कि यदि नारी अपनी बुद्धि और दृढ़ निश्चय के साथ कार्य करे तो वह मुश्किल से मुश्किल परिस्थितियों में भी सफल हो सकती है। हाँ काल के मुँह से खींच कर अपने पति को वापिस लाने वाली ये कोई और नहीं सती सावित्री ही थी, जिसकी कथा मेरे मन को छू गई। मैं यह पुस्तक **'मधु कथ्य-सती सावित्री कथा'** उन सभी बुद्धिमान नारियों को समर्पित करती हूँ जो अपने पूर्ण आत्मविश्वास के साथ हर कार्य को अंजाम तक पहुंचाना चाहती हैं। अपनी सूझबूझ और नैतिक मूल्यों के साथ सौहार्दपूर्ण वातावरण में जीवन जीना चाहती हैं।

सबसे उत्तम भावना, हो खुद पर विश्वास ।
देता रहता ये हमें, प्रेम और उल्हास ।।
प्रेम और उल्हास, खुशी देता है सबको ।।
बनते मुश्किल काम, सिखा दे जीना हमको ।
'मधु' ये दृढ़ विश्वास, काम करवा दे हमसे ।
खुशियों की सौगात, हमें मिल जाये सबसे ।।

मधु सिंघी

अनुक्रमणिका

१. प्रस्तावना १२

२ प्रथम सर्ग : राजा अश्वपति को पुत्रीरत्न की प्राप्ति १५

३. द्वितीय सर्ग : सती सावित्री का बाल्यकाल १९

४. तृतीय सर्ग : वर की खोज २६

५. चतुर्थ सर्ग : सावित्री का दृढ़ निश्चय ३२

६. पंचम सर्ग : सावित्री का विवाह ४०

७. षष्ठम् सर्ग : यम से संवाद ४४

८. घनाक्षरी छंद ५५

९. गद्य में संपूर्ण कथा ५६

१०. संदेश ६४

प्रस्तावना

दोहा छंद

ईश्वर से है कामना, लेखन में हो धार ।
हंस वाहिनी शारदे, करना बेड़ा पार ।।१।।

ज्ञानार्जन है साधना, मिलता है सम्मान ।
माँ सरस्वती साथ दे, बड़े सहज ही ज्ञान ।।२।।

मानव रचना ईश की, सबसे अद्‌भुत मान ।।
अपने हाथों से भरी, प्रभु ने इनमें जान ।।३।।

रचना रचनाकार की, होती है पहचान ।
जो रखता सहेज कर, मिलता उससे मान ।।४।।

देता रच इतिहास जो, सच्चा रचनाकार ।
मार्ग दिखाये और को, मन में हर्ष अपार ।।५।।

योद्धा विजयी युद्ध में, जीते ऋषि रख मौन ।
बल शाली देखे बहुत, जीता यम से कौन ।।६।।

रहते सवार सत्य पर, मानें कैसे हार ।
एक सती ऐसी हुई, यम से जीती नार ।।७।।

रोला छंद

सत्य झेलता वार, पीछे झूठ को ठेले ।
नहीं मानता हार, वह जीत जाय अकेले ।।१।।

सत्य रखे जो साथ, अंदर दुख नहीं पीते ।।
काल वही ले जीत, जो विश्वास को जीते ।।२।।

ये है पक्की बात, शीलव्रत नारी रग में ।
हरा सके क्या और, कोई उसे फिर जग में ।।३।।

शीलवती जो नार, कालजयी कही जाती ।
लेता हर कोई नाम, पहचान जग में पाती ।।४।।

पृथ्वी से यमलोक, चल दी सशरीर नारी ।
सत्यवान के साथ, यम पर पड़ गई भारी ।५।।

जीता यम से कौन, कथा एक ये जानें ।
काल लिया था जीत, लोहा सती का मानें ।।६।।

रखे आत्मविश्वास, सच्चा वही अधिकारी ।
चला युगों से नाम, वह सती सावित्री नारी ।।७।।

मधु कथ्य
सती सावित्री कथा
(खंड काव्य)
मधु सिंघी

प्रथम सर्ग

राजा अश्वपति को पुत्रीरत्न की प्राप्ति

कुँडलिया छंद

चाहे विपदा हो बड़ी, हल भी अपने पास ।
धीरज धर सुलझाइये, करते रहें प्रयास ।।
करते रहें प्रयास, आस का दीप जलाकर ।
उचित मिलेगा मार्ग, दिखेगी मंजिल जाकर ।।
चिंतन की 'मधु' बात, मिले हल गाहे-गाहे ।
हर मुश्किल आसान, मनुज जैसा हल चाहे ।।१।।

आल्हा छंद

आता ज्येष्ठ अमावस का दिन,
वट सावित्री पूजन खास।
पति आयुष भर साथ रहेगा,
नारी के मन में विश्वास।।१।।

नार सुहागन रहना चाहे,
सावित्री है एक मिसाल।
आशा खास यही थी उसको,
सुखमय बीते हर इक साल।।२।।

आयुष्य मिले पति को पूरा,
माँग लिया यम से वरदान।
पूत मिले सौ उसने चाहा,
लंबा जीवन पूर्ण निदान।।३।।

काल बना जो यम आया था,
यम ने मानी उनसे हार।
बुद्धि-निपुण वह नार पतिव्रता,
देख चकित उसका आचार।।४।।

ज्येष्ठ अमावस का जब दिन था,
उसने पाया था वरदान।
सत्यवान को यम ने छोड़ा,
यम ने दे दी एक जुबान।।५।।

शौर्य कहानी यही बतायें,
हमको इस नारी पर गर्व।
वीर सती सावित्री जन्मी,
माद्र नरेश मनाये पर्व।।६।।

अश्वपति वही अनुशासन प्रिय,
थे राजऋषि गुणों की खान।
धर्म-दया तप में थे आगे,
दानी भी वह एक महान।।७।।

नैतिक मूल्यों के वह पक्के,
एक निपुण शासक भी साथ।
साहस पूर्ण किये थे निर्णय,
जनता राह टिकाती माथ॥८॥

एक दिवस पूछा मुनियों से,
क्या मेरे आगे का हाल।
होगा बोलो पूत मुझे कब,
बीत रहा था लंबा काल॥९॥

ज्ञानी मुनि सब मिलकर बोले,
ऐसा तो दिखता न मुहूर्त।
पुत्र विरह का योग बना है,
होगा कैसे तुमको पूत॥१०॥

ऐसा सुनकर आहत राजा,
सोचे वह तो रोज उपाय।
लेते रहते शाम सवेरे,
ज्ञानी-ध्यानी से वह राय॥११॥

साधे तप वह ध्यान लगाये,
बीते कुछ ऐसे ही साल।
योगी बनकर बीता जीवन,
संतति बिन सुधरे क्या हाल॥१२॥

ठान चुके थे मन में वह तो,
पूरी होगी इक दिन आस।
व्रत उपवास सभी वह करते,
मन में था पूरा विश्वास॥१३॥

मन्नत माँगी मंदिर-मंदिर,
निकला काफी लंबा काल।
साठ बसंत हुए जब पूरे,
घर में आयी कन्या बाल॥१४॥

खुशियाँ चारों ओर मनी थी,
जनता में छाया उल्लास।
माद्र नरेश हुए उत्साही,
पायी फिर जीने की आस॥१५॥

पूजा देवी सावित्री को,
रुपवती पायी संतान।
सावित्री फिर नाम रखा था,
पाया उसने भी सम्मान॥१६॥

द्वितीय सर्ग

सती सावित्री का बाल्यकाल

कुँडलिया छंद

जैसे सूरज नभ रहे, देता सदा प्रकाश ।
बेटी से रौनक सदा, चमके मन आकाश ।।
चमके मन आकाश, नित्य ऊजाला भरता ।
सुता हृदय का नूर, सदा ही दमका करता ।।
सोचे 'मधु' यह बात, समय बीते फिर ऐसे ।
घर में चारों धाम, भक्ति में जीवन जैसे ।।२।।

आल्हा छंद

बरसों तक जब राह तकी थी,
फिर पायी ऐसी संतान।
पूरे यत्नों से पाला था,
बेटी उनको लगती शान।।१७।।

थी मनमोहक बाला ऐसी,
अपलक बैठ निहारे मात।
देखे वह तो ऐसे मुस्काती,
उत्साही मन जागे रात।।१८।।

बालकपन प्यारी सी बातें,
मोहित होते घर के लोग।
पंख लगा फिर वक्त गुजारे,
भागे सबके मन के रोग।।१९।।

बचपन से दृढ़ निश्चय वाली,
धुन की थी पक्की वह बाल।
कार्य सदा वह पूरा करती,
हो जाते सब देख निहाल।।२०।।

अनुकंपा थी उसके मन में,
वह तो सबका पूछे हाल।
पर उपकारी भाव लिये वह,
सबकी बनती थी वो ढ़ाल।।२१।।

माता भी मन मोहित होती,
बेटी उनकी थी जो शान।
और नहीं थी बाला ऐसी,
इतनी थी सुंदर गुणवान।।२२।।

जीवन मानक बदले माँ के,
मार्ग मिला नव आया रास।
खुशियों में डूबी रहती थी,
उनके जीने की वह आस।।२३।।

खूब जतन करती बेटी का,
सीख सिखाये बैठे पास।
नित्य नया वह भी तो जाने,
उसका नव जीवन नव प्यास॥२४॥

नैतिक मूल्य सुता ने समझे,
पूछे माँ से नित्य सवाल।
थी गुण संपन्न धर्मशिला भी,
देकर उत्तर नित्य निहाल॥२५॥

गुण संपन्न बेटी हो जिसकी,
माँ को होता पूरा गर्व।
फिर उल्लासी जीवन बीते,
घर में जैसे नित हो पर्व॥२६॥

देवि कृपा से कन्या पायी,
पूर्ण कलाओं में वह दक्ष।
देख अचंभित होते थे सब,
देखे उसका कोई पक्ष॥२७॥

संस्कारी कन्या वह ऐसी,
रखती मात-पिता का ध्यान।
चिंतित मात-पिता को देखे,
करना इक दिन कन्या दान॥२८॥

काल निकलता पंख लगाकर,
जब-जब माँ बेटी की बात।
सर्वाधिक मूल्यों की बातें,
करती दोनों वे दिन-रात॥२९॥

सावित्री तो सत्यवती थी,
मुख मंडल सूरज सा तेज।
ओजस्वी बाला थी सुंदर,
देख उसे चंदा निस्तेज॥३०॥

यौवन आते-आते बाला,
और बनी वो तो गुणवान।
चारों ओर उसी की चर्चा,
मिलता उसको सबसे मान॥३१॥

सत्यवती वो रूपवती थी,
जीवन मूल्यों का था बोध।
मानक सब जीवन के जाने,
अद्‌भुत एक विलक्षण शोध॥३२॥

ज्ञानी जन से शिक्षा लेकर,
उसमें आया और निखार।
मुनियों से दर्शन की चर्चा,
ऋषियों से फिर धर्म विचार॥३३॥

चंचल अरु आखेट निपुण थी,
ऐसा तेज विलक्षण ओज।
जो भी देखे हर्षित होता,
जैसे मुखड़ा एक सरोज॥३४॥

राजा की चिंता बढ़ जाती,
जब-जब देखे बेटी रूप।
राज कुमार मिले बस ऐसा,
जिनका पितु ओजस्वी भूप॥३५॥

दूत गये संदेशे भेजे,
देख रहे थे चारों ओर।
बेटी सम अब वर मिल जाये,
पकड़े उसकी जीवन डोर॥३६॥

अश्वपति सतत रहते विचलित,
लंबन होता देख विवाह।
अविरल ढूंढ रहे थे वर को,
बेटी की करते परवाह॥३७॥

काल सदा ही चलता रहता,
पंख लगा उड़ते दिन रात।
जल्दी कन्या दान करूँगा,
कन्या का हूँ मैं भी तात॥३८॥

पुत्री के जो साथ जँचे वह,
जिसके मुखड़े पर हो ओज।
चैन तभी आयेगा मुझको,
नेक जमाता दे दूँ खोज॥३९॥

पुत्री से थक हार उवाचे,
तुम पा जाओ अपना ठाँव।
मैं तो अब बूढ़ा हूँ देखो,
कैसे घूमूँ नगर नव गाँव॥४०॥

मेरी अब ये है अभिलाषा,
जाओ तुम हर देश तुरंत।
लेकर अपने मंत्री-गण को,
ढूँढ़ो तुम भी अपना कंत॥४१॥

योग्य-वरण तुम पहले करना,
करना चयनित सोच-विचार।
जोड़ी सबसे हो अति सुंदर,
हो बलशाली राजकुमार॥४२॥

संस्कारी गुणवान रहे वह,
नैतिक मूल्यों का सम्मान।
बातों में संयम हो उसके,
नहीं अनर्गल हो गुणगान॥४३॥

जीवन साथी ऐसा होना,
सच का देता हो जो साथ।
वीर-गुणी भी हो तुम जैसा,
पीले कर दूँगा मैं हाथ।।४४।।

वृद्ध पिता की बात सुनी तब,
किया बात पर उनके गौर।
पितु ने सौंपी जिम्मेदारी,
भ्रात नहीं है उसके और।।४५।।

ज्ञानमयी सावित्री समझे,
वह जाने शास्त्रों की बात।
मोक्ष गमन के तब अधिकारी,
कन्या-दान करे जब तात।।४६।।

भार बड़ा कंधों पर जब हो,
चिंता लेती नव आकार।
जाकर बाहर देखे कैसे,
हो कैसे सपने साकार।।४७।।

सपना एक पिता का होता,
बेटी का सुखमय संसार।
शांत तभी पितु होंगे उसके,
वर खोजे उनके अनुसार।।४८।।

तृतीय सर्ग

वर की खोज

कुँडलिया छंद

पाकर आज्ञा तात की, निकली करने खोज ।
जीवन साथी ढूँढ़ना, जिसके मुख पर ओज ।।
जिसके मुख पर ओज, परीक्षा बहुत बड़ी है ।
नैतिकता के साथ, लगी फिर प्रश्न झड़ी है ।।
गर्वित थी 'मधु' नार, स्वयं ढूढ़े वर जाकर ।
कन्या होती वीर, विश्वास पितु का पाकर ।।३।।

आल्हा छंद

पायी आज्ञा दक्ष पिता की,
निकली घर से ले आशीष।
मंत्री गण भी साथ चले थे,
ढूँढ़ रही अपना जगदीश।।४९।।

वीर सदा भावों से थी वह,
माने कैसे वह फिर हार।
एक अनूठा लक्ष्य लिये थी,
लाँघे उसने घर के द्वार।।५०।।

सावित्री जो क्षत्राणी थी,
सच्ची एक निडर थी नार।
मिलने जाती राजाओं से,
करते सब उसका सत्कार।।५१।।

राजकुमारों से नित मिलकर,
सबकी देखी बढ़ती शान।
आदर पूर्ण सभी देते थे,
करते सावित्री का मान।।५२।।

ऋषि-मुनियों से मिलने जाती,
उनसे ज्ञान मिला उपहार।
घूम रही थी वन-उपवन भी,
दान-दया करती उपकार।।५३।।

ज्ञानी जन से करती चर्चा,
नर में गुण हो कैसे ज्ञात।
कैसे जाने कुछ ही पल में,
कैसे करना उनसे बात।।५४।।

मान नहीं रखता बातों में,
संयम में रहता हो गात।
अपने जैसी सोच रखे बस,
भाव सरल रख करता बात।।५५।।

नैतिक मूल्यों को वह माने,
मन में न रखे एक विकार।
छवि ऐसी थी उसके मन में,
स्वप्न चली करने साकार।।५६।।

सबकी कथनी मन में रखकर,
खोज रही थी नर अनजान।
मानवता बसती हो उसमें,
वृद्ध जनों को दे सम्मान।।५७।।

बात सदा रख सीधी सच्ची,
देता हो नारी को मान।
आ जाये विपदा भी भारी,
रख सकता हो उसकी आन।।५८।।

तात-वचन को पूरा करने,
वन में भी भटकी वह नार।
सत्यवान को देखा उसने,
हर्षित मन था पहली बार।।५९।।

सूरज सा मुख मंडल उसका,
चंदा जैसे शीतल भाव।
ज्ञान वृहस्पति जैसा उसमें,
मन पर छोड़ा एक प्रभाव।।६०।।

बात हुई जब उससे पहले,
मन से सहज लिया संज्ञान।
सत्य सरल सी भाषा उसकी,
ज्ञानी वह पूरा विद्वान।।६१।।

सच्चाई भाषा में उसके,
बातों में था पूर्ण कसाव
मात-पिता भी सच ही बोले,
साथ चलेगी जीवन नाव।।६२।।

अंधे मात-पिता थे उसके,
करुणा का उसको संज्ञान।
वृद्ध पिता की करता सेवा,
माता को देता सम्मान।।६३।।

पूत हुआ जब पैदा माँ के,
अंधापन भी पाया साथ।
लूटा राज पड़ौसी ने फिर,
ये सब था किस्मत के हाथ।।६४।।

सोच रही सावित्री मन में,
कर लूँगी जीवन निर्वाह।
सोचा जैसा वर पाया है,
कर ही देंगे तात विवाह।।६५।।

अब तो खुशियाँ घर में बाँटू,
जाकर शीघ्र पिता के साथ।
यात्रा का मैं हाल सुनाऊँ,
खुश वे होंगे हाथोंहाथ।।६६।।

उधर पिता भी थे चिंता में,
सावित्री होगी किस हाल।
मन में बैठे सोच रहे थे,
नारद ऋषि आये तत्काल।।६७।।

नारद ऋषि जब भी आते थे,
स्वागत करता था दरबार।
उनसे ज्ञानमयी चर्चाएँ,
लंबी वार्ताएँ हर बार।।६८।।

वे भी हाल सुनाते सबका,
सुनने को भी थे तैयार।
राजकुमारी भी आ पहुँची,
दलबल लेकर घर के द्वार।।६९।।

आयी पुत्री आज कहाँ से,
नारद ऋषि पूछे तत्काल।
रोचक यात्रा सावित्री की,
उसने पूर्ण सुनाया हाल।।७०।।

ज्ञानी-मुनि ऋषिराज मिले थे,
बहुत मिले थे राज कुमार।
आदर सबसे पूरा पाया,
अच्छा एक लगा सुकुमार।।७१।।

आतुर देख सभी को उसने,
पूर्ण तुरंत बतायी बात।
कार्य दिखाया कर पुत्री ने,
हर्षित उसके बूढ़े तात।।७२।।

खुशियाँ छायी पूरे घर में,
नारद ऋषि बोले थे टोक।
भूल हुई है तुमसे पुत्री,
इन भावों को देना रोक।।७३।।

राज कुमारी देख अचंभित,
कैसी भूल बताओ आप।
राजकुमार गुणों के स्वामी,
ऋषि-मुनियों का उन पर श्राप।।७४।।

चतुर्थ सर्ग

सावित्री का दृढ़ निश्चय

कुँडलिया छंद

बोले केवल सत्य ही, संयमी सत्यवान ।
मैंनें वरण जिसे किया, गुण उनके लो जान ।।
गुण उनके लो जान, कहे आँखें सच्चाई ।
उनकी हर इक बात, रास मुझको तो आई ।।
उसके 'मधु' हर बोल, कर्ण में मिश्री घोले ।
दृढ़ निश्चय विश्वास, साथ भाषा में बोले ।।४।।

आल्हा छंद

सच्चाई रग-रग में सबके,
सच बोले पूरा परिवार।
मेल रहेगा बिल्कुल अच्छा,
प्रेम सदा जीवन का सार।।७५।।

अंधत्व मिला मात-पिता को,
उसमें कैसे उसका दोष।
सेवा करते मात-पिता की,
मन में तनिक नहीं है रोष।।७६।।

सावित्री ने और बताया,
वह ज्ञानी बातों में दक्ष।
विश्वासी वह पूरा दिखता,
देख लिया मैंनें हर पक्ष।।७७।।

मैंनें पूर्ण विचार किया है,
मन में मेरे अति उत्साह।
सत्यवान ही जीवन-साथी,
दिल की बस इतनी है चाह।।७८।।

राजा ने नारद से पूछा,
संशय क्या है बोलें आप।
पहले बात बतायें पूरी,
कैसे क्यों हैं उन पर श्राप।।७९।।

नारद ऋषि बोले राजा से,
सर्व गुणी हैं राजकुमार।
ध्यान लगा कर सुन लो राजन,
शापित है पूरा परिवार।।८०।।

द्यूमत्सेन सफल थे राजा,
बढ़िया करते थे वे काज।
वृद्ध हुए पर बाल नहीं था,
बैद बुलाये ऋषि-मुनिराज।।८१।।

आकर सब विद्वत-जन बोले,
बात हमारी लो तुम मान।
योग नहीं शुभ दिखते जानो,
कैसे होगी अब संतान॥८२॥

द्यूमत्सेन अहंकारी थे,
ले आये ऋषियों को साथ।
उनसे ही फिर यज्ञ कराया,
बाँध दिये उनके फिर हाथ॥८३॥

यज्ञ किया बंदी रख सबको,
शासक था वह तो दमदार।
अपनी हट भी पूरी कर ली,
कैसे माने वह तो हार॥८४॥

दे डाले क्रोधित ऋषियों ने,
राजा को फिर दोनों श्राप।
बालक जब भी होगा घर में,
होंगे अंधे दोनों आप॥८५॥

बाल युवा होते मर जाये,
वंश नहीं आगे का जान।
माफी माँगी नृप पछताये,
ऋषियों की हठ पक्की मान॥८६॥

घोर कुपित अपमानित होकर,
निकले ऋषि सब देकर श्राप।
भोग रहे फल राजा अब तक,
करते रहते पश्चाताप।।८७।।

अरि ने उनका शासन छीना,
निकले वन को लेकर पूत।
दोनों को अंधत्व मिला है,
ले जायेंगे सुत यम दूत ।।८८।।

राजकुमार गुणी है ज्यादा,
अल्प समय है उसके पास।
सावित्री का हो गठबंधन,
जीवन कैसे आये रास।।८९।।

बात अश्वपति सुनकर बोले,
वर चुन लो तुम कोई और।
सोच अभी भी सकते हैं हम,
ढूँढ़ो जाकर दूजी ठौर।।९०।।

तात नहीं चाहेगा कोई,
उनकी पुत्री पाये कष्ट।
जीते जी वह तो मर जाये,
उसका तो जीवन ही नष्ट।।९१।।

सावित्री ने बोला सबको,
शीलवती हूँ मैं तो नार।
पति रूप जिसे मैंने माना,
ये तो होगा अंतिम बार॥९२॥

अब क्या सोचें क्या समझायें,
उसने ठोकी अंतिम मेख।
दिल से मान लिया था सबने,
उसके दृढ़ निश्चय को देख॥९३॥

नारद ऋषि ने होकर सहमत,
आगे की बतलायी चाल।
शील-सुता होती है जिसकी,
अंकुश में आ जाये काल॥९४॥

सत्यवान पर होगी विपदा,
एक दिवस आयेगा काल।
तुम उसकी तैय्यारी रखना,
काल बुनेगा अपना जाल॥९५॥

कैसा होगा आगे जीवन,
क्या रखना है तुमको ध्यान।
शीलवती तुम सच की देवी,
देंगे यम तुमको सम्मान॥९६॥

नारद से आशीष मिली थी,
तीनों लोकों के थे नाथ।
माना सबने पूरा कहना,
बात बनी फिर हाथों हाथ।।९७।।

पलकों पर रख पाला जिसको,
कैसे झेले बेटी ताप।
उचित वरण फिर होगा कैसे,
पितु चिंता में पूरी रात।।९८।।

सोच विचार किया मन पक्का,
पिघला बेटी का वो तात।
नारद की बातों को सोचा,
सावित्री की मानी बात।।९९।।

सावित्री जो सच ही बोले,
पितु को था पूरा विश्वास।
फिर भी आगे की थी चिंता,
झेलेगी पुत्री वन वास।।१००।।

वन-जीवन आसान नहीं है,
पुत्री को फिर कह दी बात।
सुख-सुविधा में पाला तुमको,
चिंता करते तेरे तात।।१०१।।

मात-पिता की देखी चिंता,
सोचा था उसने हर पक्ष।
हार नहीं मानेगी वह भी,
वन-जीवन में होगी दक्ष।।१०२।।

बेटी का मन जान गयी माँ,
माता के मन था उल्हास।
मन में फिर भी पूरी चिंता,
खुश रहने का एक प्रयास।।१०३।।

माता ने की सब तैयारी,
बेटी के मन के अनुसार।
उत्सुकता भी पूरी मन में,
बस जाये उसका संसार।।१०४।।

सोच विदाई बेटी की फिर,
चिंतित हुई मन में मात।
पुत्री दूर रहेगी वन में,
सहना कैसे मुश्किल बात।।१०५।।

कैसा जीवन उसका आगे,
कौन रखेगा उसका ध्यान।
मात-पिता से बढ़ शुभ चिंतक,
कौन हुआ है अब तक जान।।१०६।।

पुत्री का दृढ़ निश्चय देखा,
था सहमत पूरा परिवार।
निश्चित एक घड़ी तय करके,
मात-पिता निकले वर-द्वार।।१०७।।

तात विदाई करने निकले,
बेटी की बातों को मान।
मन में फिर भी चिंता गहरी,
समधी से पूरे अनजान।।१०८।।

चाह पिता की एक सदा से,
जाना-माना हो परिवार।
बेटी राज करे उस घर में,
सुखमय हो उसका संसार।।१०९।।

मात-पिता चिंतन में डूबे,
मन में आये बहुत विचार।
सावित्री के साथ पहुंचे,
सत्यवान के घर के द्वार।।११०।।

पंचम सर्ग

सावित्री का विवाह

कुँडलिया छंद

लेकर दलबल साथ में, चलने को तैय्यार ।
जाकर पहुँचे वन सभी, सत्यवान के द्वार ।।
सत्यवान के द्वार, लहर उमंग की छायी ।
सावित्री की जीत, विदा की बारी आयी ।।
पितु होते 'मधु' धन्य, सुरक्षित हाथों देकर ।
पुत्री भी आश्वस्त, दुआ परिजन की लेकर ।।५।।

आल्हा छंद

द्यूमत्सेन खुशी से झूमे,
घर में सबको पाकर धन्य।
सावित्री को माँगू मैं भी,
परिजन क्या मानेंगे अन्य।।१११।।

मन में ये विश्वास नहीं था,
फल जायेगी मन की बात।
राजन मैं तो हूँ वनवासी,
एक तुम्हीं राजा विख्यात।।११२।।

भावुक हो अश्वपति उवाचे,
आप करो पुत्री स्वीकार।
आज विवाह करें फिर संपन्न,
ये होगा मुझ पर उपकार।।११३।।

जान अश्वपति की मंशा को,
हर्षित था पूरा परिवार।
तत्काल रचा वेदी मंडप,
घर में छाया हर्ष अपार।।११४।।

मिल कर हर्षोल्लास मनाया,
दोनों परिवारों का संग।
मिलन हुआ दो आत्माओं का,
भर दिल में खुशियों के रंग।।११५।।

शादी के बंधन ने दे दी,
सावित्री को नव पहचान।
वल्कल-पात वसन ही पहने,
वनबाला जैसे परिधान।।११६।।

होता मुश्किल वन का जीवन,
फिर भी माना उसने सत्य।
स्थापित खुद को कर लेना,
सुघड़-सुदृढ़ नारी का कृत्य।।११७।।

सास-ससुर की करती सेवा,
सीखी घर के सब आचार।
घर की एक चहेती बनकर,
पाया उसने सबका प्यार॥११८॥

आपस में सब मिलकर रहते,
घर के सब लोगों में हर्ष।
दिन तो अच्छे बीत रहे थे,
काल रहा वह तो उत्कर्ष॥११९॥

लकड़ी लाने जंगल जाना,
सत्यवान की हर दिन बात।
सावित्री जाना भी चाहे,
रोक लगा देते थे तात॥१२०॥

जिस दिन मृत्यु दिवस आया था,
सावित्री को दिन था ज्ञात।
उपवास रखा सावित्री ने,
थी जंगल जाने की बात॥१२१॥

वन जाने का मन था पक्का,
आज हुई थी बहुत उदास।
संग मुझे भी रहना इनके,
आज दिवस आया है खास ॥१२२॥

जंगल जाकर लकड़ी लाना,
बोले पितु मुश्किल है काम।
फिर भी वे समझाकर बोले,
मत करना तुम दोनों शाम।।१२३।।

चिंता घेरे सावित्री को,
मन में था ज्यादा ही कष्ट।
आगे कैसे क्या होगा फिर,
मेरा तो जीवन ही नष्ट।।१२४।।

सत्यवान का काल यहीं है,
यादों में थी नारद सूक्ति।
यम से बात करूँगी कैसे,
मन में वह तो सोचे युक्ति।।१२५।।

षष्टम् सर्ग

यम से संवाद

कुंडलियां छंद

सन्मुख यम को देखना, कैसा था वो काल ।
सावित्री वह नाम है, जिसने ताना भाल ।।
जिसने ताना भाल, यम के दूत भी काँपे ।
ऐसी वीरा नार, यम भी कष्ट को भाँपे ।।
सोचे 'मधु' यह बात, निडर सावित्री उन्मुख ।
करती वाद विवाद, खड़े यम जिसके सन्मुख ।।६।।

आल्हा छंद

पति जब लकड़ी काट रहे थे,
तेज अचानक सर में दर्द।
बाहों में सर सावित्री के,
तन को देखा होता सर्द।।१२६।।

गोदी में ले बैठी सर को,
मन में था पूरा विश्वास।
सत्यवती का आभामंडल,
कैसे कोई आता पास।।१२७।।

मूर्छित सत्यवान को देखा,
समझी वह तो पूरी बात।
फिर पूरा आत्मबल जगाया,
बैठी पकड़ कंत का गात।।१२८।।

आते देखा एक पुरुष को,
बलशाली था बहुत विशाल।
एक भयंकर वनमानुष सा,
देख जिसे भय हो तत्काल।।१२९।।

था तेजस्वी ऐसा वह तो,
देखे भी वह आँखें फाड़।
आँखों से निकले अंगारे,
बातों में थी एक दहाड़।।१३०।।

सर पर डाल मुकुट आया था,
उसके मुख पर दमके तेज।
सन्मुख जिसके भी वह जाये,
उसको वह कर दे निस्तेज।।१३१।।

यम ने फिर मुट्ठी में पकड़ा,
सत्यवान का झट से माथ।
खींच लिया तन अंगुल भर का,
उसने लेने अपने हाथ।।१३२।।

बोले यम हे सति सावित्री,
मेरे दूत हुए थे पस्त।
आन पड़ी उन पर विपदा,
तेरी दृढ़ता से वे त्रस्त।।१३३।।

दूत सभी फिर लौटे मेरे,
देखा तेरा ऐसा रूप।
कैसे आते पास तुम्हारे,
तुम दोनों का तेज अनूप।।१३४।।

दृढ़ता से सावित्री बोली,
मैं भी चलती इनके साथ।
मैं कैसे ले जाने दूँगी,
मेरे पति ही मेरे नाथ।।१३५।।

बिन पति के जीवन कैसा,
जीते जी मेरा ही घात।
इनके बिन पल एक नहीं जो,
निकल सकेगा मानो बात।।१३६।।

सत्यवान को लेने आया,
काल इसी का आया आज।
मृत्यु बिना कैसे तुम आओ,
गलत करे यम कैसे काज।।१३७।।

अब सावित्री तुम हठ छोड़ो,
मान नहीं सकता मैं बात।
मेरा कार्य इसे ले जाना,
तुम जा देखो उसका गात।।१३८।।

जाकर बात करो परिजन से,
उलझ रही मुझसे बेकार।
कार्य समय पर कर लो पूरे,
पति का कर अंतिम संस्कार।।१३९।

पीछे चल दी सावित्री तो,
आगे चलते थे यमराज।
सावित्री दृढ़ होकर बोली,
चलना मुझको भी है आज।।१४०।।

प्राण जहाँ बसते हों मेरे,
कैसे जाये मुझसे दूर।
आज रहूँ इनके बिन कैसे,
मेरे मन पीड़ा भरपूर।।१४१।।

चाहे जो भी माँग करो तुम,
ले जाने दो तेरा कंत।
अब लौटो तुम थक जाओगी,
बातों का अब कर दो अंत।।१४२।।

बात नहीं जब बनते देखी,
सावित्री ने चल दी चाल।
तारीफों के पुल फिर बाँधे,
चतुराई से पूछे हाल।।१४३।।

खुश होकर सावित्री बोली,
देव बड़े लगते हो आप।
सुफलित होता देव समागम,
मिटते भक्तों के संताप।।१४४।।

सास-ससुर फिर देखे जग को,
हो धन वैभव प्राप्त अकूत।
खोया राज्य मिले फिर वापिस,
मम पितु को हो जाये पूत।।१४५।।

सावित्री मैं खुश हूँ तुमसे,
तुम पर मेरा और प्रताप।
तुम तो नीति-निपुण हो नारी,
अब तुम मत करना संताप।।१४६।।

बोल प्रभावी सावित्री के,
हार नहीं माने वह नार।
पीछा कैसे छोड़ेगी वह,
यम के मन में एक विचार।।१४७।।

संत समागम आज हुआ है,
मेरे जीवन की है शान।
मेरे पति का वंश बढ़े फिर,
सौ पूतों का दो वरदान।।१४८।।

भूखी प्यासी सावित्री थी,
देखा उसका बढ़ता ताप।
बोले यम ऐसा ही होगा,
तुम मत पाओ अब संताप।।१४९।।

बोल तथास्तु चले यम आगे,
तुम को सब हो जाये प्राप्त।
हठ मत करना अब तुम लौटो,
सीमा होती पूर्ण समाप्त।।१५०।।

पूत करूँ सौ कैसे पैदा,
शीलवती हूँ मैं तो नार।
अपने पति के साथ रहूँगी,
जाऊँगी मैं भी उस पार।।१५१।।

देव मिले मुझको यम जैसे,
पति बिन मैं क्यों पाऊँ शोक।
रोक नहीं सकता अब कोई,
चल दूँगी मैं तो यम लोक ।।१५२।।

संध्या काल हुआ अब देखो,
मैंनें मानी सारी बात।
तेरी अब एक नहीं मानूँ,
आगे जाय न कोई गात।।१५३।।

बुद्धिमता-हठधर्मी नारी,
संग उसे था पूरा ज्ञान।
यमलोक वही सशरीर चली,
रोक न पाया यम बलवान।।१५४।।

पार हुई धरती की सीमा,
सावित्री को देखा साथ।
बातों में फंस गया इसके,
चकराया यम का भी माथ।।१५५।।

शीलवती तू सत्यवती है,
ऐसी तू है पहली नार।
ले जा अपने सत्यवान को
मैंनें मानी तुमसे हार।।१५६।।

सर का दर्द हुआ था गायब,
सत्यवान में आये प्राण।
मन-मुदित हुई सावित्री भी,
भूली सब अपना फिर त्राण।।१५७।।

जीत गई थी हठगर्वीली,
पति बैठे थे उठ कर पास।
संतुष्ट हुई वह तो ऐसी,
आज बुझी बरसों की प्यास॥१५८॥

पति को पूर्ण वृतांत सुनाया,
कैसे आये थे यमराज।
कैसे-कैसे वर माँगें थे,
पूर्ण सभी कैसे हों काज॥१५९॥

दोनों बहुत प्रसन्न हुए थे,
गगन-धरा को करके एक।
सत्यवान थे पूरे हर्षित,
ऐसी पायी भार्या नेक॥१६०॥

जीवन-दान पुनः पाया अब,
मात-पिता कष्टों से दूर।
ऐसी शुभ बेला आयी थी,
मन विश्वास भरा भरपूर॥१६१॥

सावित्री से बोले फिर वे,
घर पर जाकर देखें आज।
परिवर्तन कैसा आया है,
आज सजेंगे जीवन साज॥१६२॥

देर हुई है हम दोनों को,
चिंता आतुर होंगे तात।
सावित्री भी अब सहमत थी,
जाकर बोलें सारी बात॥१६३॥

रजनी बेला जंगल में थे,
दोनों ले हाथों में हाथ।
मार्ग बताये सत्यवान ही,
जंगल पार किया फिर साथ॥१६४॥

दोनों ने घर जाकर देखा,
थे चिंता में आतुर तात।
ठीक हुई उनकी तो आँखें,
दोनों विस्मित सुनकर बात॥१६५॥

पूर्ण वृत्तांत सुनाया सबको,
दोनों ने फिर मिलकर साथ।
काल लिये यमदूत मिले थे,
कैसे आज बने वो नाथ॥१६६॥

वरदान मिला यम से ऐसा,
पूरे मिट जाये संताप।
घर आये ऋषियों ने बोला,
सावित्री का आज प्रताप॥१६७॥

बात सुनी सावित्री की जब,
पितु गर्वित थे सुनकर काज।
काम किया है पुत्रवधू ने,
दोनों कुल की रख ली लाज।।१६८।।

पितु घर जाकर सावित्री ने
पूर्ण बतायी उनको बात।
वंशवृद्धि अब दोनों कुल की,
उछल रहे सबके जज्बात।।१६९।।

जीवन सबका सुख से बीता,
पाया फिर से खोया राज।
दोनों कुल का वंश बढ़ा फिर,
साथ हुआ ये सुंदर काज।।१७०।।

सत्यवती-कर्तव्यपरायण,
हर युग में होती है नार।
संभाल रही सावित्री जैसे,
अपने दोनों कुल परिवार।।१७१।।

नारी को सम्मान मिले जब,
पूरे सबके करती कार्य।
बात यही फिर जानो सब मिल,
ये ही सबसे है अनिवार्य।।१७२।।

हो विश्वास सभी को मन से,
मिल जाये बस थोड़ा प्यार ।
मदद करे वह हर कोई की,
नारी रहती है तैयार ॥१७३॥

ऐसा पावन योग बने तो,
मिलकर होते सबके काज ।
कर्म सभी के हो फिर अच्छे,
बुद्धि - समर्थ करे फिर राज ॥१७४॥

नारी - नर सब सम भावों में,
रहने को होंगे अभ्यस्त ।
विनय - विवेक रहे फिर पूरा,
दुःख का सूरज होगा अस्त ॥१७५॥

घनाक्षरी छंद

धर्म रहे जब साथ, नियम से बंधे हाथ ।
सच्चे साथी साथ रहे, **'कोई नहीं हारते'** । ।

जो कोई नारी ने ठानी, काम करके ही मानी ।
त्रिया हठ होती खास, **'कोई नहीं टालते'** । ।

कर्म से जिसे है प्रीत, होती है उसी की जीत ।
सावित्री की बात देखो, **'आज सभी जानते'** । ।

नारी को पति से प्यार, काल भी गया था हार ।
सावित्री के प्रश्न जाल, **'यम जैसे भागते'** । ।

सती सावित्री और सत्यवान की प्रचलित कथा

प्रतिवर्ष ज्येष्ठ मास की अमावस्या को उत्तर भारत की सुहागिन स्त्रियों द्वारा और ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा को दक्षिण भारत की सुहागिन महिलाओं द्वारा वट सावित्री व्रत का पर्व मनाया जाता है। वट वृक्ष की जड़ो में ब्रह्मा, तने में भगवान विष्णु और डालियों व पत्तियों में भगवान शिव का निवास स्थान माना जाता है। इस व्रत में महिलाएं वट वृक्ष की पूजा करती हैं, सती सावित्री की कथा सुनने व वाचन करने से सौभाग्यवती महिलाओं की अखंड सौभाग्य की कामना पूरी होती है।

सावित्री और सत्यवान की कहानी का सबसे पुराना ज्ञात संस्करण महाभारत के वन (अरण्य) पर्व में मिलता है। यह कहानी महाभारत में एक अंतर्निहित कथा के रूप में ऋषि मार्कंडेय द्वारा बताई गई है। जब युधिष्ठिर ने मार्कंडेय से पूछा कि क्या कभी ऐसी कोई महिला पहले भी हुई है जिसकी भक्ति द्रौपदी से मेल खाती हो जो इतनी ही बुद्धिमान और शीलवती रही हो तब मार्कंडेय ने यह कहानी सुनाकर युधिष्ठिर को जवाब दिया।

कहा जाता है कि मद्र देश के राजा अश्वपति के कोई संतान नहीं थी। कई वर्षों तक संतान नहीं होने से वे परेशान रहते थे। एक दिन राजा ने श्रृषि-मुनियों से इस समस्या के निवारण करने के लिए कोई उपाय पूछा। ऋषि-मुनियों के कहने पर राजा ने १८ वर्षों तक कठोर तप किया और एक लाख आहुतियां दी। ब्रह्मा की पत्नी सावित्री माता ने राजा अश्वपति के तप से प्रसन्न होकर उनको एक तेजस्वी कन्या होने का वरदान दिया। सावित्री देवी की कृपा से जन्म लेने की वजह से कन्या का नाम सावित्री रखा गया।

बचपन से सावित्री बहुत प्रतिभाशाली थी। उसका बचपन पूरी सुख-सुविधा और ठाट-बाट के साथ व्यतीत हुआ। युवा होते-होते वह बहुत गुणवान और सुंदर होती चली गयी। उसके चेहरे का तेज अलौकिक था। सावित्री के पिता की चिंता बढ़ती गई, क्योंकि वे अपने पुत्री के योग्य वर ढूंढ़ना चाहते थे उन्हें कोई भी राजा अपनी पुत्री की प्रतिभा के अनुरूप नहीं मिल रहा था। इसलिए विवाह में विलंब होता देखकर राजा अश्वपति ने सावित्री को कहा कि तुम स्वयं अपने वर की खोज करने के लिए राज्य के बाहर जाओ। सावित्री ने परिस्थिति को समझते हुए सोचा कि पिता चूंकि बूढ़े हो गये है और पुत्री का विवाह जल्दी करना चाहते है। अपने कन्या-दान का धर्म निभाएं बिना वे निश्चिंत नहीं हो पायेंगे। इसलिए सावित्री पिता की आज्ञा का पालन करते हुए कुछ सहयोगियों के साथ एक रथ में सवार होकर वर की खोज में निकल पड़ी। सावित्री रास्ते में कई राजाओं और ऋषियों से मुलाकात करने लगी। सभी ने उसका बहुत स्वागत किया। ज्ञानियों से उसकी काफी नीतिगत बातें और धार्मिक चर्चाएं भी हुई। आखिर बहुत दिनों की कौशिश करने के बाद वह द्यूमत्सेन के आश्रम में पहुंची। वहाँ सावित्री की मुलाकात उनके पुत्र सत्यवान से हुई।

सत्यवान उसे बहुत पसंद आया। वह गुणवान और सुंदर व्यक्तित्व का धनी था। वह अपने अंधे माता-पिता की सेवा जिस विनम्रता के साथ कर रहा था उससे सावित्री के मन में उसके लिए और आदर बढ़ गया। वह मन ही मन में उससे प्रेम करने लगी। उसने तुरंत अपने महल में जाकर अपने पिता को यात्रा का पूरा वृतांत सुनाया और अपने मन की बात भी कह डाली। सभी यह सुनकर प्रसन्न हुए कि सावित्री ने अपना मन चाहा वर चुन लिया है। उस समय नारद ऋषि भी वहाँ उपस्थित थे। उन्होंने इस विवाह

पर आपत्ति जताते हुए कहा कि सावित्री के लिए यह उचित नहीं रहेगा। राजा अश्वपति ने जब कारण पूछा तब ऋषि नारद ने बताया कि सत्यवान गुणी बहुत है, परंतु उसका पूरा परिवार ऋषि-मुनियों के श्रापों से ग्रसित है। राजा अश्वपति विचलित हो गये और नारद मुनि से आग्रह किया कि आप विस्तार से बतायें। नारद ने कहा कि इसके पीछे एक लंबी कहानी है। सत्यवान साल्व देश के राजा द्यूमत्सेन का पुत्र है। राजा द्यूमत्सेन के कई वर्षों तक कोई संतान नहीं होने से वे यज्ञ करवाना चाहते थे। जब ऋषि-मुनियों को राजा ने यज्ञ के लिए कहा तब उन्होंने बड़े खेद के साथ उत्तर दिया कि आपके संतान का योग नहीं है और यज्ञ करवाने से इंकार कर दिया। ऐसे में राजा द्यूमत्सेन ने क्रोधित होकर ऋषि-मुनियों को बंदी बनवा दिया फिर उनसे यज्ञादि अनुष्ठान संपन्न करवाये। इससे क्रोधित होकर ऋषि-मुनियों ने द्यूमत्सेन को कई श्राप दे डाले। उन्होंने कहा कि आपके पुत्र हो जायेगा, लेकिन आपका राज्य छिन जायेगा, आप दोनों अंधे हो जाओगे और जो पुत्र होगा वह युवावस्था में ही मृत्युलोक को प्राप्त हो जाएगा। इसके बाद द्यूमत्सेन ने बहुत विनती की, परंतु ऋषि-मुनियों ने एक नहीं मानी और वे वहां से चले गये। उस दिन से आज तक राजा द्यूमत्सेन वन में ही अपना शापित जीवन व्यतीत कर रहे हैं। नारद मुनि ने राजा अश्वपति को ऐसे शापित परिवार में अपनी पुत्री का विवाह नहीं करने की सलाह दी। नारद मुनि ने सावित्री को कहा माना कि सत्यवान सर्वगुण संपन्न है, परंतु वह अल्पायु है। उसके जीवन का एक वर्ष ही शेष बचा है, बाकी का जीवन तुम कैसे व्यतीत करोगी? सावित्री ने नारद मुनि की बात मानने से इंकार कर दिया। उसने कहा कि जिसे मैंने एक बार वर के रूप में स्वीकार कर लिया है जीवन भर उसे ही वर मानूंगी। अब वह निर्णय नहीं बदल सकती। सावित्री के माता-पिता भी उसके

निर्णय पर चिंता करने लगे कि इतने राजसी ठाट-बाट में रहने के बाद हमारी पुत्री वन्य-जीवन कैसे स्वीकार कर पायेगी, परंतु सावित्री के दृढ़ निश्चय के आगे वे भी हार मान चुके थे। उन्होंने भी इस विवाह के लिए अनुमति दे दी। नारद मुनि ने सावित्री के दृढ़ निश्चय को देखकर उसे आगे की युक्ति सुझायी। उन्हें विश्वास हो गया कि सावित्री की बुद्धिमानी और सतीव्रत धर्म के आगे यम भी हार मान जायेंगे। सावित्री ने नारद मुनि की बात को अपने मन में याद रखा।

राजा अश्वपति पूरी तैयारियों के साथ सपरिवार द्यूमत्सेन के आश्रम में विवाह का प्रस्ताव लेकर पहुंचे। द्यूमत्सेन के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। सबने खुशी-खुशी यह प्रस्ताव मानते हुए राजकुमार सत्यवान और सावित्री का विवाह कर दिया।

सावित्री ने विवाह के पश्चात तुरंत वल्कल-वस्त्र धारण कर लिये। उसने जल्दी ही वन्य-जीवन को आत्मसात कर लिया। वह दिन-रात सास-ससुर और पति की सेवा में लगी रही। ठीक एक वर्ष के बाद नारद जी ने मृत्यु का जो दिन बताया था वह उसे बराबर याद था। उसके पहले दो दिन से उसने नारद मुनि के द्वारा बताया तप करना शुरू कर दिया। तीसरे दिन सावित्री ने पति के साथ वन में जाने की इच्छा जताई। पहले उसको ससुर जी ने मना किया, लेकिन उसके अत्यधिक आग्रह पर मान गये और रात्रि से पहले वन से लौटने की सलाह दी। सावित्री भी सत्यवान के साथ वन को चली गई। वन में सत्यवान लकड़ी काटने के लिए ज्योंहि पेड़ पर चढ़ने लगा, उसके सिर में असहनीय पीड़ा होने लगी। वह सावित्री की गोद में अपना सिर रखकर लेट गया।

सावित्री वट वृक्ष के नीचे अपने गोद में पति के सिर को लेकर बैठी रही। थोड़ी देर पश्चात सावित्री ने देखा यमराज आ पहुंचे

है। और सत्यवान के जीव को दक्षिण दिशा की ओर लेकर जा रहे है। यह देख सावित्री भी यमराज के पीछे-पीछे चल दी। सावित्री ने कहा हे महापुरुष आप कोई साधारण मनुष्य नहीं मुझे देव लगते है। यमराज ने उत्तर दिया मैं यमराज हूं। तुम्हारे पति की आयु समाप्त हो गई है इसे लेने आया हूँ। सावित्री ने कहा आपके दूत लेने आते हैं आप स्वयं कैसे पधारे? यमराज बोले मेरे दूत पहले आये थे, परंतु तुम्हारा तेज इतना प्रभावशाली था कि वे सत्यवान को छू भी नहीं सके। मैं जानता हूँ कि तुम देवी सावित्री का अंश हो इसलिए मुझे स्वयं आना पड़ा, अब तुम घर जाकर अपने पति की अंत्येष्टि करने की तैयारी करो, मेरे साथ चलकर अपना समय व्यर्थ मत गंवाओ। सावित्री ने उत्तर दिया उस हाड़-मांस के पुतले का मैं क्या करूं मेरे पति को आप लेकर जा रहे है पति-पत्नी का सच्चा रिश्ता दो आत्माओं का मिलन है। मैं अपने पति के बिना नहीं जी सकूंगी। एक पत्नी का धर्म है कि वह अपने पति के साथ रहे। मैं सत्यवान के साथ ही जाऊंगी। आप मुझे भी अपने साथ ले चलो। यमराज ने कहा अभी तुम्हारा यमलोक जाने का समय नहीं आया है। आज तुम्हारे पति का आयु-काल खत्म हुआ है। मुझे सिर्फ इसे ही ले जाना है, परंतु तुम बहुत गुणवान और समझदार नारी लगती हो। हे सावित्री मैं तुमसे प्रसन्न हूँ। तुम सत्यवान के बदले कोई भी वरदान मुझसे माँग लो, परंतु पति के साथ आने की जिद छोड़ दो। सावित्री ने कहा आप मेरे पति को ले जा रहे हो और मेरे सास-ससुर अंधे हैं उनका राज्य भी छिन गया है। एकमात्र पुत्र ही उनका सहारा था अब वे कैसे रहेंगे? यम ने कहा जा सावित्री अब तू लौट जा तेरे सास-ससुर की नेत्र-ज्योति वापिस आ जायेगी और उनका खोया हुआ राज्य भी उन्हें मिल जायेगा फिर भी मुझे एक बात तुम्हारी समझ में नहीं आ रही है कि एक तरफ तुम आत्मा की बातें

करती हो, पूरी आध्यात्मिक प्रवृत्ति की लगती हो और दूसरी तरफ तुम अपने सास-ससुर के लिए आँखों की रौशनी और उनका राजपाट वापिस माँगने की बात कर रही हो जो सांसारिक और नश्वर है। सावित्री ने उत्तर दिया हे यमराज आप ज्ञानी है आप तो जानते ही है कि जितनी सूक्ष्म इंद्रियों की ताकत है उसे उपयोग में लेने के लिए बाहरी स्थूल इन्द्रियां ही साधन बनती हैं। संसार में जीवन यापन करने के लिए नश्वर वस्तुओं की भी उतनी ही आवश्यकता है। आपने मेरे ससुर का जवान बेटा छीन लिया है अब बिना पुत्र के वे जंगल में अकेले कैसे रह पायेंगे इसलिए उनके आगामी जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए मैंने यह वरदान मांगा। यमराज सावित्री की नीतिपरक बातें सुन कर बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने सावित्री को और वर मांगने को कहा और बोले- मैं तुम्हें तीन वर देता हूं। बोलो तुम कौन-कौन से तीन वर मांगोगी। तब सावित्री ने कहा आप मेरे पति को ले जा रहे हो इसलिए अब पूरा जीवन मुझे सास-ससुर की सेवा में व्यतीत करना होगा फिर मेरे बूढ़े माता-पिता का क्या होगा? आप उनको भी पुत्र होने का वरदान दो। यम ने कहा सावित्री मैं तुम्हारी समझदारी का कायल हो गया हूँ जा तेरे पिता को भी पुत्र हो जायेगा। अब तीसरा वर भी जल्दी से मांग ले, बोल तुझे और क्या मांगना है। सावित्री ने तुरंत कहा मैं सौ यशस्वी पुत्र पैदा करना चाहती हूँ। यम ने अति प्रसन्नता में तथास्तु कह दिया। फिर यम ने कहा, हे पतिव्रता नारी! पृथ्वी तक ही पत्नी अपने पति का साथ देती है। अब तुम वापस लौट जाओ। अब यमलोक की सीमा शुरू होती है। उनकी इस बात पर सावित्री ने कहा कि हे देव जहां मेरे पति रहेंगे मुझे उनके साथ रहना ही होगा। यही मेरा पत्नी धर्म है। मैं पतिव्रता नारी हूँ अपने पति के बिना सौ पुत्र कैसे पैदा करूंगी? यमराज आश्चर्य चकित

होकर बोले सावित्री तुमने यह क्या मांग लिया इसके बदले और कुछ मांग लो, परंतु सावित्री ने कहा आप तो इतने ज्ञानी और संत हो आपका वचन कभी खाली नहीं जा सकता। तथास्तु कहने के बाद यमराज समझ गए कि सावित्री के पति को साथ ले जाना संभव नहीं है। इसलिए उन्होंने सावित्री को अखंड सौभाग्यवती होने का आशीर्वाद दिया और सत्यवान को छोड़कर वहां से अंतर्धान हो गए। उसी समय सत्यवान को तुरंत होश आ गया।

सावित्री पुनः उसी वट वृक्ष के पास लौट आई। जहां सत्यवान को मृत छोड़कर गयी थी। सत्यवान के मृत शरीर में फिर से जीवन संचार हुआ देखकर सावित्री अति प्रसन्न थी। इस प्रकार सावित्री ने अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय देते हुए पूरी सूझबूझ के साथ यम से संवाद कर के उनको भी निरूत्तर कर दिया। अपने पतिव्रता व्रत के प्रभाव से न केवल सावित्री ने अपने पति को पुनः जीवित करवा दिया, बल्कि सास-ससुर को नेत्र-ज्योति प्रदान करवाते हुए उनके ससुर को खोया हुआ राज्य फिर से दिलवाया। अपने पिता को भी पुत्र होने का वरदान दिलवा दिया। सावित्री इतने बड़े दुख में भी विचलित नहीं हुई। दुख में भी धैर्य के साथ बुद्धि कौशल का परिचय देते हुए उसने यमराज को बातों में हरा दिया है। अपने पति को पुनर्जीवित करवा दिया।

सत्यवान को होश आने के बाद सावित्री ने उसे पूरा वृतांत सुनाया। सावित्री के साथ-साथ सत्यवान भी उत्सुक था। दोनों घर जाकर देखना चाहते थे कि सच में यमराज के वरदानों का असर हुआ है या नहीं। घर जाते ही माता-पिता की नेत्र-ज्योति को वापिस आया देखकर उन्हें पूरा विश्वास हो गया। उसी समय द्यूमत्सेन के शत्रु की मृत्यु का समाचार पाकर वे पुनः अपने राज्य में रहने चले गये। सभी ने सावित्री की बुद्धिमता की भूरी-भूरी प्रशंसा की और

सुखपूर्वक आगे का जीवन व्यतीत किया।

इस प्रकार एक नारी के सही रूप में बुद्धि और विवेक का उपयोग करने पर किस तरह दोनों कुलों की वंशवृद्धि हुई। यम जैसे ताकतवर व्यक्ति ने भी उस शीलव्रती नारी से हार मान ली। वह एक कालजयी नारी बन गयी इसलिए इतिहास में उन्हें सदैव सती सावित्री के रूप में याद किया जाता है। वट वृक्ष के नीचे सत्यवान के प्राणों का पुनः संचार हुआ था। तभी से वट सावित्री अमावस्या और वट सावित्री पूर्णिमा के दिन वट वृक्ष का पूजन-अर्चन करने का विधान है। यह व्रत करने से सौभाग्यवती महिलाओं की मनोकामना पूर्ण होती है और उनका सुहाग अखंड रहता है।

मधु राजेन्द्र सिंघी
नागपुर (महाराष्ट्र)
९४२२१०१९६३

संदेश

नारियाँ रुकतीं कहाँ सब, कार्य करना चाहतीं हैं ।
हौंसले नभ छू चुकें अब, आज उड़ना चाहतीं हैं ।।

दीप आशा का जला है, साथ में उत्साह पूरा ।
आँधियाँ रोके नहीं बस, ध्यान रखना चाहतीं हैं ।।

मोड़ जीवन में अचानक, आ रहें वे देख लेतीं ।
जो चुनौती सामने हो, वे निपटना चाहतीं हैं ।।

देख मंजिल सामने हैं, दौड़ती निर्बाध होकर ।
नारियों की सोच ऐसी, तेज उठना चाहतीं हैं ।।

कामना ये रोज करतीं, वे किसी के काम आये ।
साधना इनकी यही हैं, आज बढ़ना चाहतीं हैं ।।

सोच रखते जो बड़ी वे, मर्म ये भी जान लेते ।
भाव समझे नारियों का, साथ रहना चाहतीं हैं ।।

आज लोहा मानते सब, कार्य सबका रोज करतीं ।
साथ में कंधा मिलाकर, नित्य चलना चाहतीं हैं ।।

मधु सिंघी

नाम : **मधु राजेंद्र सिंघी** (लेखिका, कवयित्री एवं समाजसेवी)
शिक्षा : एम.ए. (संस्कृत)
रुचि : समाजसेवा, गायन, पठन, लेखन, फोटोग्राफी
कार्य : संस्थापिका : समरूपण www.samrupan.org

प्रकाशित पुस्तकें :

एकल संग्रह :

१) मधुकृति(हाइकु व हाइगा संग्रह) २) मधुछंद(काव्य संग्रह)
३) मधुश्रव्य(भजन संग्रह) ४) मधुकाव्य (कविता संग्रह)
५) मधु सार जैनदर्शन चिंतन: जीवन साधना (कुँडलिया छंद के साथ गद्य में व्याख्या)

साझा संग्रह :

१) गीतमाला (गीत) २) जैन भजन संग्रह (भजन) ३) जैन भजनावली (भजन) ४) प्रणम्य वीर (भजन) ५) झाँकता चांद (हाइकु) ६) हाइकु सम्मेलन (हाइकु) ७) ताँका की महक (ताँका) ८) प्रवाह (हाइकु) ९) हाइकु की सुगंध (हाइकु) १०) हाईकु मंजूषा (हाइकु संग्रह) ११) कस्तूरी की तलाश (रेंगा) १२) चारु चिन्मय चोका (चोका) १३) ये दोहे गूंजते से (दोहा छंद) १४) कुंडलियां बोलती है (कुँडलिया छंद) १५) गुँजन (हाइकु संग्रह) १६) घनाक्षरी गूँजेगी (घनाक्षरी छंद) १७) २०२० के अनुपम दोहे १८) आल्हा के हस्ताक्षर शंखनाद १९) कतौता की कलियाँ (कतौता संग्रह) २०) हाइकु मंजूषा २१) अखंड काव्यार्चन (आल्हा छंद) २२) ओस की बूँदे (हायकू) २३) घनाक्षरी सुमन २४) गीतिका रश्मि (गीतिका) २५) रंगोत्सव (गीतिका) २६) गुलमोहर के फूल (चोका) २७) २०२२ के अनुपम दोहे २८) दीप्ति कलश (कुँडलिया) २९) माहिया साझा संग्रह (माहिया) ३०) सायली साझा संकलन (सायली) ३१) २०२२ के अनुपम दोहे ३२)कतौता की धनक (कतौता) ३३) सपनों की धरा ३४)त्रिपदा संकलन(त्रिपदा) ३५)चौपाई संकलन (चौपाई)

भजन एवं काव्य प्रस्तुतियाँ :

- डी डी वन, दूरदर्शन,केबल एवं सामाजिक संस्था में।

काव्य पाठ की लगातार प्रस्तुतियाँ :

- आकशवाणी नागपुर, फेसबुक, यू ट्यूब , प्राइवेट चैनल्स।

कविताएं और लेख प्रकाशित :

- लोकमत हिंदी समाचार , नवभारत, हितवाद, टाईम्स ऑफ इंडिया,राष्ट्र पत्रिका, पावर ऑफ वन ,नागपुर।
- ई त्रैमासिक पत्रिकाएँ:–हिंदी भाव भूमि,काव्यांजलि इत्यादि।

सम्मान :

महानगरपालिका, महिला अघाड़ी मोर्चा सम्मान, कला मंच सम्मान, श्री किसन मूक बधिर विद्यालय, नागपुर हीरो सम्मान, टाइम्स ऑफ इंडिया, आदर्श महिला मंडल, साहित्य कला मंडल, स्नेह आँगन मातृ सेवा संघ, ज्येष्ठ राजपूत फोरम, एकता बहुद्देशीय संस्था सम्मान, हिंदी महिला समिति, उद्योजिका सम्मान, वी.आई.ए., मातृत्व दिवस काव्य सम्मान, आम्र महोत्सव स्लोगन सम्मान, पुस्तक चर्चा सम्मान, महाराष्ट्र हिंदी भाषा सभा एवं वामा विमर्श सम्मान, हाइकु रत्न छत्तीसगढ़, मात्सुओ बासो – शब्द शिल्पी अलंकार पानीपत, कविता बहार सम्मान, शब्द कोविद सम्मान, आल्हा शतकवीर सम्मान, सवैया शतकवीर सम्मान, चंद्रमणि शतकवीर –कलम की सुगंध, लाईफ टाईम अचीवमेंट अवार्ड डॉ. रिचाज् क्लीनिक नागपुर एंव टाईम्स ऑफ इंडिया पूणे के संयुक्त तत्वावधान में, श्रीमती उमादेवी पटेरिया राष्ट्रीय पुरस्कार हिंदी लेखिका संघ भोपाल,संस्कृति संवाहक सम्मान–हिंद देश परिवार, छत्तीसगढ़,भारतमाता अभिनंदन– हरियाणा, काव्य रत्न सम्मान–अंतर्राष्ट्रीय सखी साहित्यपरिवार, स्व.सुषमा स्वराज अवार्ड–महिला मोर्चा भाजपा, गाणार सम्मान–शैलेश साहित्य कुँज,नारी शक्ति पुरस्कार– महिला व बाल कल्याण विभाग, जिला परिषद नागपुर।

अंतरराष्ट्रीय सम्मान :

गोल्डन बुक ऑफ वल्ड रिकॉर्ड सम्मान (लगातार २७ घंटे तक रामायण पर कविताएँ प्रस्तुत ,साहित्योदय संस्था)।

अविशा प्रकाशन
AVISHA

978-93-94577-96-1